अवैध धर्मांतरण की कार्रवाई एक बड़े अंतरराष्ट्रीय सिंडिकेट का षड्यंत्रः योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री ने धर्मांतरण की हर कोशिश के खिलाफ कठोर कार्रवाई के दिए निर्देश

लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अवैध धर्मांतरण की कार्रवाई एक बड़े अंतरराष्ट्रीय सिंडिकेट द्वारा किए जाने की पुष्टि हो रही है। उन्होंने कहा कि इस सिंडिकेट द्वारा पूर्व में धर्मांतरित व्यक्तियों को प्रशिक्षित करके उनके द्वारा अवैध धर्मांतरण का कार्य श्रृंखलाबद्ध रूप से कराया जा रहा है।

आगामी पर्व त्योहारों के दृष्टिगत सुदृढ़ कानून-व्यवस्था व श्रद्धालुओं की सुविधाओं के संबंध मुख्यमंत्री योगी ने आज शासन स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों और पुलिस कमिश्नरों, मंडलायुक्तों, जिलाधिकारियों व जिला पुलिस प्रमुखों के साथ समीक्षा बैठक की और व्यापक जनहित में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अवैध धर्मांतरण के बारे में कहा कि दिव्यांग बच्चे, नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं पर इस सिंडिकेट की विशेष नजर रहती है। आर्थिक प्रलोभन भी दिया जा रहा है। अवैध धर्मांतरण के इस पूरे सिंडिकेट का सफाया किया जाना आवश्यक है। सभी जिलों में इससे संबंधित हर छोटी से छोटी सूचना को पूरी गंभीरता से लिया जाए। प्रदेश में अवैध धर्मांतरण के खिलाफ कठोर कानून लागू है। ऐसी हर गतिविधि के खिलाफ तत्परता से कार्रवाई की जाए।

उन्होंने कहा कि हाल के समय में देश के कई हिस्सों में अवैध धर्मांतरण की घटनाएं प्रकाश में आई हैं। गाजियाबाद में ऑनलाइन गेमिंग व चौटिंग एप के माध्यम से किशोर बच्चों के धर्मांतरण की घटना से हम परिचित हैं। एक स्थान पर मूक-बधिर बच्चे को अवैध धर्मांतरण के लिए प्रेरित किया गया। सूचना मिलते ही तत्काल कार्यवाही हुई और एक बड़ी साजिश का पर्दाफाश हो सका। ऐसी एंटी सोशल और एंटी नेशनल घटनाओं को समय रहते नियंत्रित किया जाना बहुत आवश्यक है। आज की एक छोटी सी लापरवाही भविष्य के लिए बड़ा कैंसर बन सकती है।

श्रावण मास और बकरीद के समय सतत सतर्क रहने का निर्देश : मुख्यमंत्री ने कहा कि 04 जुलाई से पवित्र श्रावण मास का प्रारंभ हो रहा है। इस वर्ष अधिमास के कारण श्रावण मास दो माह की अवधि का हो रहा है। इस अवधि में श्रावणी शिवरात्रि, नागपंचमी और रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाएगा। श्रावण मास में परंपरागत कांवड़ यात्रा निकलेगी। इसमें सोमवार पूजन का भी विशेष महत्व है। इससे पूर्व 29 जून को बकरीद मनाया जाएगा। स्पष्ट है कि कानून-व्यवस्था के दृष्टिगत यह समय संवेदनशील है। अत: हमें सतत सतर्क-सावधान रहना होगा।

ये रहे मुख्यमंत्री के प्रमुख दिशा निर्देश : विगत दिनों रमजान माह और ईद के अवसर पर धार्मिक कार्यों से यातायात प्रभावित नहीं हुआ। इस प्रयास की पूरे देश में सराहना हुई है। इस बार बकरीद और मुहर्रम के मौके पर भी हमें यही व्यवस्था लागू रखनी होगी। स्थानीय प्रशासन द्वारा इस संबंध में संबंधित धर्मगुरुओं व बुद्धिजीवियों से संवाद बना लिया जाए। बकरीद पर कुर्बानी के लिए स्थान का चिन्हांकन पहले से ही होना चाहिए। विवादित जगहों पर कुर्बानी नहीं होनी चाहिए। पूर्व में तय और चिन्हित स्थान के अतिरिक्त कहीं और कुर्बानी न हो। प्रत्येक दशा में यह सुनिश्चित करें कि कहीं भी प्रतिबंधित पशु की कुर्बानी न हो। हर जिले में कुर्बानी के उपरांत अपशिष्ट के व्यवस्थित निस्तारण की व्यवस्थित कार्ययोजना होनी चाहिये। अन्यथा की स्थिति में यह अपशिष्ट बीमारी का कारक बनते हैं हर एक पर्व शांति और सौहार्द के बीच संपन्न हों, इसके लिए स्थानीय जरूरतों को देखते हुए सभी जरूरी प्रयास किए जाएं।

कालपी के कागज उद्योग को मुख्यमंत्री योगी ने सौंपा जीआई टैग का प्रमाण पत्र

जालौन

बुंदेलखंड इलाके का पिछड़ापन दूर करने के लिए भाजपा सरकार लगातार प्रयास कर रही है। यहां के कुछ प्रमुख उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने %एक जिला एक उत्पाद% योजना के अंतर्गत कालपी के कागज उद्योग को शामिल कर उसे मंगलवार को जीआई टैग का प्रमाण पत्र सौंपा है। इस प्रमाण पत्र के मिलने के बाद उद्योग अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना सकेंगे।

बता दें कि, बुंदेलखंड को नई पहचान दिलाने के लिए भाजपा सरकार ने यहां पर बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे, डिफेंस कॉरिडोर और हर घर नल योजना के साथ कई उद्योगों को गति दिलाने का काम किया है। इसी कड़ी में वर्षों पुराने कालपी के कागज उद्योग को मंगलवार को आयोजित हुए एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जीआई टैग का प्रमाण पत्र सौंपा है। कालपी के कागज उद्योग का इतिहास 1000 वर्ष पुराना है। वर्ष 2018 में इसे %एक जिला एक उत्पाद% योजना में शामिल किया गया था। कालिंजर के चंदेलकालीन राजा परमादि देव परमार्थ के दरबारी कवि जगनिक ने अपने ग्रंथ %आल्ह खंड% में भी कालपी के हाथ कागज का उल्लेख किया है। इससे यह प्रमाणित होता है कि हाथ कागज कालपी का एक हजार साल पुराना है। कालपी के कागज उद्योग की मांग विदेशों तक रही है। इस उद्योग से जुड़ी हुई तकरीबन 55 फैक्ट्रियां यहां पर संचालित हो रही हैं और करीब 5 हजार मजदूर यहां पर काम कर रहे हैं।

योगी सरकार का दावा, छह वर्ष में रिकॉर्ड 2.14 लाख करोड़ गन्ना मूल्य का भुगतान

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार का दावा है कि पिछले छह वर्षों में सरकार ने गन्ना किसानों को रिकॉर्ड 2.14 लाख करोड़ रुपये के गन्ना मूल्य का भुगतान कर दिया है। राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने कहा कि योगी सरकार ने सबसे पहले प्रदेश में बंद चीनी मिलों को दोबारा शुरू कराया और बकाया गन्ना मूल्य के भुगतान पर फोकस किया।

प्रवक्ता के अनुसार योगी सरकार के प्रयासों से चीनों मिलों का संचालन सुधरा तो चीनी का उत्पादन भी अधिक हुआ। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर आज प्राथमिकता के तहत किसानों का नियमित भुगतान भी हो रहा है। इससे चीनी की मिठास और बढ़ गयी। साथ ही प्रति हेक्टेयर गन्ने की उत्पादकता पर भी जोर दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2016-17 में प्रदेश में जहां प्रति हेक्टेयर 72.38 मैट्रिक टन गन्ने का उत्पादन हो रहा था, वहीं आज यह बढ़कर प्रति हेक्टेयर 82.31 मैट्रिक टन हो गया है। पिछले 6 वर्षों में प्रति हेक्टेयर 9.93 मैट्रिक टन गन्ने के उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है। इससे गन्ना किसानों को प्रति हेक्टेयर में 349 रुपये प्रति कुंतल की दर से 34,656 रुपये का अतिरिक्त लाभ मिल रहा है।

प्रवक्ता ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी के प्रयास से आज उत्तर प्रदेश में गन्ना किसानों के लिए 120 चीनी मिलें संचालित हैं। इन चीनी मिलों द्वारा वर्ष 2021-22 में 1,016.26 लाख टन गन्ने की पेराई की गयी थी। इससे 101.98 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। वहीं 2022-23 में अब तक 1,098.31 लाख टन गन्ने की पेराई की जा चुकी है, जिससे 105.41 लाख टन चीनी का उत्पादन किया जा चुका है। पिछले 6 वर्षों में चीनी मिलों द्वारा रिकार्ड 6,403 लाख टन गन्ने की पेराई की गयी, जिससे रिकार्ड 683.07 लाख टन चीनी का उत्पादन किया जा चुका है। इतना ही नहीं, प्रदेश में 2 नई चीनी मिलों की स्थापना की गयी और 4 चीनी मिलों को दोबारा शुरू कराने के साथ 30 चीनी मिलों की क्षमता में विस्तार किया गया।

खास खबर | संत श्रीपाल ने अपने विलक्षण व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्पूर्ण समाज को ध्यान और भजन से जोड़ा

ब्रह्मलीन संत श्रीपाल का जीवन सभी के लिए उच्च आदर्श : महावीर सिंह

हरदोई

संत श्रीपाल (1942-2021) धर्म अध्यात्म के चिन्तक तथा शिव सत्संग मण्डल आश्रम के संस्थापक थे। साधकों एवं सत्संगी जनों ने बताया कि 30 जून 1942 को उनका जन्म ग्राम हड़हा मलिकापुर में हुआ था। उनके बचपन का नाम 'सेठ' था। आरंभ से ही धर्म अध्यात्म में रुचि होने के कारण, उन्होंने वेदों, शास्त्रों और उपनिषदों के प्रचार के लिए उत्तर प्रदेश के जनपद हरदोई के राजस्व ग्राम हुसेनापुर धौकल में सन 1993 में शिव सत्संग मण्डल आश्रम की स्थापना की।

आश्रम में आने वाली 30 जून को संत श्रीपाल को याद करते हुए कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। ब्रह्मलीन संत श्रीपाल के विषय में बुधवार को शिव सत्संग मंडल के मंडल प्रचारक महावीर सिंह ने बातचीत कई बड़ी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि ब्रह्मलीन संत श्रीपाल का प्रभाव हम इक्कीसवीं सदी में भी महसूस कर रहे हैं। उनसे प्रेरणा पाकर उन सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक, अंधविश्वासों से लोहा ले रहे हैं, जो दीमक बनकर समाज व धर्म को भीतर ही भीतर खोखला कर रहे हैं। सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक जगत की व्याधियों, दुर्बलताओं और त्रुटियों का अध्ययन उन्होंने किया।

मंडल प्रचारक ने बताया कि संत श्रीपाल का चिंतन मूलत- वेद, उपनिषद एवं शास्त्रों पर आधारित था, जो अपने उद्भव काल से ही चिरंतन और शाश्वत समझे जाते रहे हैं। जीवन के सत्य, सत्संग, सुमिरन व परमात्मा को पाने के लक्ष्य को संत एवं सत्संग परंपरा से ही पाया जा सकता है। संत श्रीपाल का जीवन दर्शन हर मानव को दिशा-बोध प्रदान करता रहेगा और वह प्रासंगिक बने रहेंगे ।यह ठीक है कि समकालीन समस्याओं से भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा। वह मानवतावादी, धर्म संस्कृति के उद्गाता, शांति के नायक, सांप्रदायिक, सद्भावना के उन्नायक और अन्याय, अज्ञान, अभाव और शोषण के विरुद्ध संघर्षरत रहने वाले योद्धा सन्यासी थे। ध्यान दें तो हमें पता चलता है कि उनका संघर्ष समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियां से था। ईश्वर एक है, यह पूरा विश्व मानता है। परंतु समय-समय पर जीवन में आने जाने वाले उतार चढ़ाव से सामान्य जन प्रभावित होते रहे हैं। इन्हीं कारणों से चतुर लोगों ने अनेक पूजा पद्धतियों की मनगढ़त रचना रच दी। संत श्रीपाल का स्पष्ट मानना था कि शिवत्व की प्राप्ति से ही अमरत्व की प्राप्ति की जा सकती है। शिवोपासना से मुक्ति और मोक्ष पाया जा सकता है।

वह स्वामी दयानंद द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' से बहुत प्रभावित थे। इसीलिए सत्संगी जनों को हर घर तक 'सत्यार्थ प्रकाश' पहुंचाने की सलाह देते थे। सत्यार्थ प्रकाश ने अंधविश्वास, कुरीतियों, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहुदेववाद, अंध श्रद्धा, तीर्थाटन पर जो जमकर प्रहार किया। उन्होंने अपनी परंपरा, धार्मिक आदर्शों के प्रति आस्था और संस्कृति के प्रति विश्वास जगाया। साथ ही शाकाहार का पक्ष मजबूत करते हुए शाकाहार को जीवन का आधार बताया। जीव हत्या को महापाप बताते हुए, मांस मदिरा सेवन को प्रतिबंधित किया।

खबरम्

खास खबरें

ऐसा जीव जो जन्म के समय नर लेकिन आखिर में मादा बन जाता है, वैज्ञानिक भी भौचक्के

कुछ समय पहले ऐसे जीवों को लेकर एक लंबी-चौड़ी रिसर्च की गई थी। आप चौंक जाएंगे करीब पांच सौ से अधिक ऐसी प्रजातियों का पता लगाया जो अपना लिंग खुद चेंज कर लेती हैं। इन्हीं में से एक विशेष प्रजाति की मछली भी शामिल है, आइए उसी पर चर्चा करते हैं।

मेडिकल साइंस के जरिए अब तो इंसानों में यह संभव हो पाया है कि वे अपना लिंग परिवर्तन करा लेते हैं। लेकिन दुनिया में बहुत से लोगों को यह पता नहीं होगा कि कई ऐसे जीव मौजूद हैं जो खुद अपना लिंग परिवर्तन करा लेते हैं और यह परिवर्तन प्राकृतिक तौर पर होता है। इसके लिए किसी सर्जरी या अन्य उपकरण की जरूरत नहीं पड़ती है। हैरानी की बात यह है कि ऐसे एक-दो जीव नहीं, बल्कि सैकड़ों जीव हैं जो ऐसा करते हैं। इन्हीं में से एक विशेष प्रजाति की मछली भी शामिल है। दरअसल, मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इसी जमात में यह अनोखी मछली शामिल है जो नर के तौर पर जन्म लेती है लेकिन फिर आखिर में मादा बन जाती है। इस मछली को लेकर कहा जाता है कि यह जन्म से ही नर होती है लेकिन जन्म के तीन चार साल बाद यह मादा बन जाती है। समुद्र में पैदा होने वाली यह मछली मीठे पानी में रहना पसंद करती है। हालांकि इसे खारे पानी में भी रहना काफी पसंद होता है। इस मछली का नाम बारामुंडी मछली है जिसे एशियाई समुद्री बास के नाम से भी जाना जाता है। यह मछली सफेद कलर की होती है जो दिखने में किसी चांदी की परत जैसी दिखाई पड़ती है। यह मछली अपने लिंग बदलने के कारण पूरी दुनिया में काफी फेमस है। इस मछली की तरह कई अन्य प्रजाति की मछलियां भी इसी तरह अपने लिंग परिवर्तन में सक्षम होती हैं। कुछ समय पहले न्यूजीलैंड के वैज्ञानिकों ने इन जीवों को लेकर एक लंबी-चौड़ी रिसर्च की थी। इसमें उन्होंने पांच सौ से अधिक ऐसी प्रजातियों का पता लगाया जो अपना सेक्स खुद चेंज कर लेती हैं। इनमें क्लाउनफिश, कोबुलाई और ब्लू हेड रेस्से नाम की प्रजातियां सबसे फेमस हैं। इनका जन्म मादा के रूप में होता है लेकिन बाद में खुद को नर के रूप में बदल लेती हैं।

आखिर कैसे होता है ये सब : ऐसा जीवों में जेनेटिक बदलाव के कारण होता है। रिसर्चर्स ने ऐसे जीन का भी पता लगाया जो इस प्रक्रिया में एक्टिवली भाग लेता है। वैज्ञानिकों की ये रिसर्च साइंस एडवांसेस जर्नल में प्रकाशित की गई थी। रिसर्च में बताया गया कि जब इनके झुंड का नर कहीं खो जाता है या मर जाता है तो झुंड की सबसे वयस्क मादा नर की जगह लेती है।

दुनिया के सबसे खतरनाक बॉर्डर पर बसा है ये गांव, फिर भी घरों में कभी नहीं लगता ताला

नॉर्थ कोरिया और साउथ कोरिया की सीमा पर बसे एक गांव में घरों में ना तो कभी दरवाजे बंद होते हैं और न ही इन दरवाजों पर कभी ताले लगते हैं। आज हम आपको ऐसे गांव में के बारे में बता रहे हैं, जिसके चारों तरफ खतरा ही खतरा है।

बम बारूद के बीच बसे इस गांव का नाम टोंगिल चोन गांव है, जिसे यूनिफिकेशन विलेज भी कहा जाता है। यहां कि सबसे खास बात ये है कि यहां दरवाजे कभी न तो बंद होते हैं और न ही इन दरवाजों पर कभी ताले लगते हैं।

इस गांव तक आना आसान नहीं : इस गांव तक आना आसान नहीं है। हर तरफ नॉर्थ कोरिया और साउथ कोरिया के सैनिक मौजूद है और गांव तक आने के लिए साउथ कोरिया के सैनिकों से इजाजत लेनी पड़ती है। नॉर्थ कोरिया और साउथ कोरिया के बीच अक्सर तनाव बढ़ जाते हैं। कई बार हालात इतने खराब हो जाते हैं कि युद्ध जैसे हालात बन जाते हैं, लेकिन इसके बावजूद टोंगिल चोन गांव के लोग कभी अपने गांव को छोड़कर दूसरी जगह नहीं जाते। इस गांव में मान्यता है कि उन पर ईश्वर की खास कृपा है और उन्हें युद्ध के दौरान भी नुकसान नहीं होगा।

कभी मिसाइल से नहीं हुआ गांव को नुकसान : गांव में रहने वाले एक बुजुर्ग ने बताया कि गांव बॉर्डर के बेहद नजदीक होने के बावजूद उन पर आसमान से कोई भी मिसाइल या बम नहीं गिरेगा। कोरिया के बीच हुए युद्ध के दौरान भी इन गांव के लोगों ने यही रहने का फैसला किया था। उस दौरान दोनों देशों के सैनिकों की तरफ से दागी गई रॉकेट और मिसाइल इनके गांव को पार करती हुए एक दूसरे के इलाकों में गिरी, लेकिन गांव को कुछ खास नुकसान नहीं हुआ। तमाम खतरों के बावजूद ये गांव छोड़कर कोई नहीं गया। गांव की तरफ जाने वाले रास्तों में माइन्स का खतरा आज भी बना हुआ है। यहां कई जगह माइन्स के खतरों को बताने वाले साइन बोर्ड लगे हुए हैं।

इस वजह से घरों पर नहीं लगता ताला : कोरिया घूमने के लिए आने वाले पर्यटकों के बीच भी ये गांव काफी पॉपुलर है। करीब 400 घरों वाले इस गांव में हमेशा घरों के दरवाजे खुले रहते हैं और कोई भी अपने दरवाजों पर ताले नहीं लगाता। दोनों तरफ कोरिया के सैनिकों की मौजूदगी होने की वजह से उन्हें चोरी का डर नहीं सताता। हालांकि, देखा जाए तो पूरे कोरिया में लोग काफी ईमानदार हैं और चोरी जैसी घटनाएं बहुत ही कम होती है, लेकिन फिर भी ये गांव बाकी गांवों से अलग है।

युद्ध के दौरान भी गांव को नहीं पहुंचा नुकसान : 25 जून 1950 को नॉर्थ कोरिया ने साउथ कोरिया पर हमला बोल दिया था और दोनों देशों के बीच काफी बड़ी लड़ाई लड़ी गई थी। नॉर्थ कोरिया ने साउथ कोरिया पर मिसाइलों से लेकर हवाई जहाजों से बम बरसाए थे। उस दौरान युद्ध में हर चीज तबाह हो गई थी। गांव के पास खड़ा रेल इंजन तबाही की कहानी बयां करता है। साउथ कोरिया के सैनिकों के लिए हथियार और गोला बारूद ले जाने वाली इस ट्रेन पर 1000 से भी ज्यादा गोले गिराए गए थे।

चिली के रेगिस्तान में सड़ रहे 60 हजार टन बेकार कपड़े, अंतरिक्ष से दिखा भयानक पहाड़

सैंटियागो। दुनिया के सबसे बड़े कपड़ों के ढेर को अब अंतरिक्ष से भी देखा जा सकता है। दक्षिणी अमेरिकी देश चिली के रेगिस्तान के बीच में फैले 60,000 टन कपड़ों का यह ढेर स्पेस से दिखाई दे रहा है। यह साइट वाकई चौंकाने वाली है और समय के साथ धीरे-धीरे बढ़ी है। लेकिन अब यह इतनी बड़ी हो गई है कि एक सैटेलाइट ने इसकी तस्वीर कैप्चर की है। चिली का अटाकामा रेगिस्तान पृथ्वी पर सबसे शुष्क स्थान है और अब यह कपड़ों का सबसे बड़ा डंपिंग ग्राउंड बन गया है जिन्हें न तो बेचा जा सकता है और न ही इस्तेमाल किया जा सकता है। साइट की एक सैटेलाइट तस्वीर में क्रिसमस स्वेटर और स्की बूट्स कपड़ों के बीच सड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। यह हाई-रिज़ॉल्यूशन सैटेलाइट ने कैप्चर की है जिसमें डंपसाइट का भयावह फैलाव साफ देखा जा सकता है। ये तस्वीरें हर साल अमेरिका, यूरोप और एशिया से चिली के इक्विक बंदरगाह पर आने वाले लगभग 60,000 टन कपड़ों को दिखाती हैं।

खास खबर | भविष्य में चंद्रमा और मंगल पर भेजे जाने वाले मिशनों के लिए काफी मददगार ...

नासा का कमाल, एस्ट्रोनॉट्स के पेशाब और पसीने से बनाया पीने का पानी

अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने अनोखी सफलता हासिल की है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में रहने वाले एस्ट्रोनॉट्स के लगभग 98 प्रतिशत मूत्र और पसीने को पीने के पानी में बदलने में उसने कामयाबी हासिल की है। यह भविष्य में चंद्रमा और मंगल पर भेजे जाने वाले मिशनों के लिए काफी मददगार हो सकता है।

यह सिस्टम में वेस्ट वाटर को जमा कर उसे वॉटर प्रोसेसर असेंबली (डब्ल्यूपीए) में भेजा जाता है, जो उसे पीने योग्य पानी बनाती है।

क्या है तरीका : एक खास कंपोनेंट ड्राइवर दल की सांस में मौजूद नमी और पसीने से केबिन की हवा में जारी नमी को पकड़ने के लिए एडवांस डी-ह्यूमिडिफ़ायर का इस्तेमाल करता है। एक अन्य सब सिस्टम, यूरिन प्रोसेसर असेंबली (यूपीए), वैक्यूम आसवन का इस्तेमाल करके पेशाब से पानी निकालती है।

आसवन से पानी और पेशाब का नमकीन पानी बनता है जिसमें अभी भी कुछ फिर हासिल करने योग्य पानी होता है। इस बचे हुए वेस्ट वाटर को निकालने के लिए विकसित ब्राइन प्रोसेसर असेंबली (बीपीए) का इस्तेमाल करके, एस्ट्रोनॉट्स ने 98 प्रतिशत पानी फिर पाने का टारगेट अचीव किया, जो पहले 93 और 94 प्रतिशत के बीच था। अंतरिक्ष स्टेशन के लाइफ सपोर्ट सिस्टम का मैनेजमेंट करने वाले जॉनसन स्पेस सेंटर की टीम के सदस्य क्रिस्टोफर ब्राउन ने कहा, लाइफ सपोर्ट सिस्टम के विकास में यह एक बहुत ही अहम कदम है। मान लीजिए कि आप स्टेशन पर 100 पाउंड पानी इकट्ठा करते हैं। आप उसमें से दो पाउंड खो देते हैं और बाकी 98 प्रतिशत यूं ही घूमता रहता है। इसे चालू रखना एक बहुत बढ़िया उपलब्धि है।

क्या बोले एक्सपर्ट : बीपीए यूपीए की ओर से पैदा नमकीन पानी लेता है और इसे एक खास झिल्ली तकनीक से चलाता है, फिर पानी को एवोपोरेट करने के लिए नमकीन पानी के ऊपर गर्म, शुष्क हवा फेंकता है। यह सिस्टम आर्द्र हवा बनाती है, जो चालक दल की सांस और पसीने की तरह, स्टेशन के वाटर कंजर्वेशन सिस्टम से जमा की जाती है। टीम ने माना कि रीसाइकिल हुआ पेशाब पीने का विचार कुछ लोगों को परेशान कर सकता है। लेकिन वे इस बात पर जोर देते हैं कि आखिरी रिजल्ट जमीनी स्तर पर नगर निगम के वाटर सिस्टम के उत्पादन से कहीं बेहतर है।

आपका राशिफल 29 जून

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ): जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुल एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। योग्यताएं सम्मान दिलायेंगी। शुभांक-3-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होंगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। विद्यार्थियों को लाभ। शुभांक-3-5-6

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। शुभांक-2-4-6

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होंगी। संतान की उन्नति के योग है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। शुभांक-3-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए दूरदर्शिता से काम लें। स्वास्थ्य नरम होगा। शुभांक-3-6-8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): व्यापार में वृद्धि होगी। यश प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखें। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। पुराने मित्र से मिलन होगा। शुभांक-6-7-8

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते): पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-1-4-6

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू): महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सफलता मिलेगी। पुराने मित्र के कारण कार्य बाधा हटेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। कर्ज देने से बचें। शुभांक-4-7-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): स्वास्थ्य का पाया कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। एकाकी वृत्ति त्यागें। शुभांक-5-7-9

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): अपने काम को प्राथमिकता से करें। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान सम्मान बढ़ेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। धार्मिक यात्रा का योग। शुभांक 4 7 9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। यार दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। किसी कार्य विशेष के लिए यात्रा आवश्यक होगी। शुभांक-1-6-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते हैं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। आलस्य का त्याग करें। काम पर पैनी नजर रखिए। सब्र का फल मीठा होता है अत:धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। शुभांक-2-5-7